



## पोषण से भरपूर बहुवर्षीय चारा है रिजका

त्रलोकी सिंह\*, मनीष कांवट\*, राहुल देव\*\* और अरविन्द सिंह तेतरवाल\*\*\*



॥ गुजरात राज्य के कच्छ जिले में रिजका फसल से वर्षभर हरा चारा प्राप्त किया जाता है। यह रबी मौसम में उगाई जाने वाली हरे चारे की बहुवर्षीय प्रमुख फसल है। इसका उपयोग हरे चारे एवं सूखे चारे दोनों रूप में किया जाता है। इसमें बहुत ही पौष्टिक गुण पाये जाते हैं, जोकि पशुओं के उचित विकास एवं वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। दलहनी कुल की फसल होने के कारण, इसके चारे में प्रोटीन एवं कार्बोहाइड्रेट की मात्रा अधिक पाई जाती है। सूखे एवं हरे चारे के अलावा रिजका की फसल से बीज भी प्राप्त किये जाते हैं। इससे मृदा की उपजाऊ शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ॥

**रिजका** को एकवर्षीय एवं बहुवर्षीय फसल के रूप में उगाया जाता है। इसकी फसल लवणीय एवं क्षारीय मृदा में भी ली जाती है। इसकी फसल से वर्षभर चारा प्राप्त होता रहता है। कच्छ जिले में मृदा एवं पानी दोनों ही क्षारीय एवं लवणीय हैं। यहां के चारे की प्रमुख फसलें ज्वार, मक्का, बाजरा, रिजका इत्यादि हैं। रिजका एक पौष्टिक चारे की फसल है। इसमें प्रोटीन 15 प्रतिशत, पानी की मात्रा 74

प्रतिशत, रेशा 29.2 प्रतिशत, नाइट्रोजनरहित निष्कर्ष 36.4 प्रतिशत, कैल्शियम 2 प्रतिशत, फॉस्फोरस 0.48 प्रतिशत, पोटेशियम 2.43 प्रतिशत पाया जाता है।

### उन्नत किस्में

भारत में रिजका की प्रमुख उन्नत किस्में उगाई जाती हैं: चेतक (एस 224),



रिजका फसल वृद्धि अवस्था में

टाइप-9, आनंद-2, जीएयू एल-2, आनंद रिजका-3, आनंद रिजका-4, आरएल-88, (आरएलएस-88) आरआरबी 07-1

### मृदा एवं तैयारी

इसकी खेती के लिए मृदा का पी-एच मान 6.8 से 8.5 तक होना चाहिए। अच्छी वृद्धि एवं विकास के लिए बलुई दोमट मृदा अच्छी मानी जाती है। खेत का अच्छा जल निकास होना अति आवश्यक है तथा मृदा भुरभुरी और दानेदार होनी चाहिए। खेत में तैयारी के लिए एक जुताई मिट्टी पलट हल से तथा इसके साथ दो-तीन बार हैरो चलाकर मृदा को भुरभुरा बना लेना चाहिए।

### खेत की बुआई एवं विधि

बुआई का सही समय 15 अक्टूबर

\*भाकृअनुप-कृषि विज्ञान केंद्र, केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, कुकमा भुज-370105, कच्छ (गुजरात); \*भाकृअनुप-विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा (उत्तराखंड); \*\*\*भाकृअनुप-कृषि विज्ञान केंद्र, भाकृअनुप-केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, पाली माडवाड (राजस्थान)

से नवम्बर का प्रथम सप्ताह ठीक रहता है। बुआई के लिए उन्नत बीज 15 से 20 कि.ग्रा. की मात्रा से प्रति हैक्टर पर्याप्त होते हैं। इन्हें पंक्तियों में सीडड्रिल से 15 से 20 सें.मी. की दूरी एवं 1.25 सें.मी. गहराई पर बोना चाहिए।

#### बीजोपचार

- बीजों का फफूंदीजनित रोगों से बचाव के लिए 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. थीरम या कार्बेन्डाजिम से उपचारित करके बुआई करनी चाहिए।
- खेत में पहली बार रिजका की खेती करना चाहते हैं, तो बुआई के पहले बीज को 250 ग्राम प्रति 10 कि.ग्रा. बीज को राइजोबियम जीवाणु संवर्ध से उपचारित कर सकते हैं।

#### अंतरवर्ती फसल

कच्छ में रिजका के साथ में मिश्रित फसल के रूप में प्रचलन अधिक है। इसका क्षेत्रफल दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। किसानों का यह कहना है कि इसको साथ में लेने से साथ में बोई गयी फसल को खाद लगभग 25-30 प्रतिशत कम देनी पड़ती है।

#### खाद एवं उर्वरक

रिजका की अच्छी उपज के लिए 25 से 30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तथा 50 से 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टर की दर से देनी चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुआई के समय देनी चाहिए तथा शेष नाइट्रोजन की मात्रा दो बार में डालनी चाहिए।

#### सिंचाई का प्रबंधन

इसमें सिंचाई 8 से 10 दिनों के अंतर



सरसों की कटाई उपरांत रिजका का बीज उत्पादन

पर करनी चाहिए तथा सर्दियों के मौसम में सिंचाई का अंतर 15 से 20 दिनों तक रखा जाता है। जिन मृदाओं में जलधारण क्षमता कम होती है। उनमें 5-6 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिए।

#### खरपतवार नियंत्रण

रिजका की बुआई के 20-25 दिनों पर एक निराई-गुड़ाई कर दें या पेंडिमैथालिन (2 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर) बीज अंकुरण से पहले या फ्लूक्लोरोलिन एक कि.ग्रा. मात्रा प्रति 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

#### फसल सुरक्षा

रिजका में हानि पहुंचाने वाले कीटों में रिजका इल्ली (लूसर्न कैटरपिलर), चना इल्ली (ग्रेम कैटरपिलर), सेमीलूपर व रिजका घुन आदि हैं। चना इल्ली मिट्टी के अन्दर रहती है, इसलिए दो पंक्तियों के बीच मृदा

की गुड़ाई करने से इसका प्रकोप कम किया जा सकता है या 2 लीटर क्लोरीपायरीफॉस को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से खेत में छिड़काव करना चाहिए।

#### रोग एवं रोकथाम

##### मृदुरोमिल आसिता

सर्दी के मौसम में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। इसके नियंत्रण के लिए 12.5 कि.ग्रा. सल्फर पाउडर (90 प्रतिशत) प्रति हैक्टर का उपयोग कर सकते हैं।

##### पत्तों पर धब्बे

इस रोग में पत्तों पर छोटे भूरे रंग के धब्बे और मध्य में काले और भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब (डाइथेन एम 45) 25 ग्राम को 10 लीटर पानी में डालकर स्प्रे करें।

#### हानिकारक कीट एवं रोकथाम

##### चेंपा

यह लूसर्न की फसल का गंभीर कीट है। इसके नियंत्रण के लिए नीम तेल 30 मि.ली./लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 5 मि.ली. प्रति 15 लीटर पानी में लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

##### सूंडी, तेला और कीट

यदि इनका हमला दिखे, तो कोराजिन 10 मि.ली. प्रति 15 लीटर पानी की दर से डालना चाहिए।

#### फसल की कटाई

रिजका की पहली कटाई बुआई के लगभग 55 से 60 दिनों के बाद की जाती है। इसके बाद 25 या 30 दिनों के अंतराल पर चारे की कटाई करनी चाहिए।



पत्तियों पर सफेद धब्बा का प्रभाव